अपरा एकादशी व्रत कथा (Apara Ekadashi Vrat Katha)

अपरा एकादशी (Apara Ekadashi) की कथा दो भाइयों, महिध्वज और वज्र ध्वज के इर्द-गिर्द घूमती है, जो क्रमशः धर्म और अधर्म के प्रतीक थे। महिध्वज एक सदाचारी राजा थे, जबकि वज्रध्वज एक क्रूर, अनैतिक और ईर्ष्यालु व्यक्ति थे जो अपने भाई से द्वेष रखते थे। एक दिन, वज्रध्वज ने अपने भाई की हत्या कर दी और उनके शव को एक पीपल के पेड़ के पास जंगल में छोड़ दिया। राजा महिध्वज की आत्मा भूत का रूप ले लिया और उस क्षेत्र में लोगों में भय और अशांति पैदा करने लगी। एक रात, ऋषि धौम्य उस भूतिया क्षेत्र से गुजरे और भूतिया राजा की उपस्थिति को महसूस किया। अपनी आध्यात्मिक दृष्टि और शक्तियों का उपयोग करके, उन्होंने पूरी स्थिति को समझा और मृत राजा की मदद करने का निर्णय लिया। उन्होंने भूत को आमंत्रित करने के लिए एक अनुष्ठान किया और फिर उन्हें मोक्ष प्राप्त करने में मदद करने के लिए दिव्य ज्ञान प्रदान किया।

ऋषि धौम्य ने फिर राजा महिध्वज के उद्धार में और मदद करने के लिए अपरा एकादशी व्रत करने का निर्णय लिया। व्रत पूरा करने के बाद, उन्होंने अर्जित पुण्य (पुण्य) को भूतिया राजा को स्थानांतरित कर दिया, जिन्हें फिर अपने प्रेत (भूत) रूप से मुक्त कर दिया गया और एक दिव्य शरीर प्राप्त हुआ। उन्होंने ऋषि का धन्यवाद किया और एक दिव्य रथ में स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया।

www.janbhakti.in